



विशेष अतिथि रचनाकार

4 जून, 1958 को सुलतानपुर (उ.प्र.) में जन्मे तथा हिन्दी और संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त करने वाले श्री देवमणि पांडेय अखिल भारतीय स्तर पर लोकप्रिय कवि और मंच संचालक के रूप में सक्रिय हैं। आपके दो काव्य संग्रह **‘खुशबू की लकीर’** और **‘अपना तो मिले कोई’** प्रकाशित हो चुके हैं। मुंबई में एक केन्द्रीय सरकारी कार्यालय में कार्यरत श्री पांडेय ने फ़िल्म **‘पिंजर’**, **‘हासिल’** और **‘कहाँ हो तुम?’** के अलावा कुछ सीरियलों में भी गीत लिखे हैं। फ़िल्म **‘पिंजर’** में उनके गीत **‘चरखा चलाती माँ’** को वर्ष 2003 के लिए **‘बेस्ट लिरिक ऑफ़ दि इयर’** पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हाल ही में गज़ल संग्रह **‘अपना तो मिले कोई’** के लिए आपको ताशकंद में सृजन श्री और ग्वालियर में भाषा भारती सम्मान से अलंकृत किया गया। इस बार श्री पांडेय हैं, हमारे विशेष अतिथि रचनाकार...! ✍ प्रधान सम्पादक

❖ दो गज़लें नये ज़माने की ❖

ख़्वाब सुहाने दिल को घायल, कर जाते हैं कभी-कभी
अशकों से आँखों के प्याले, भर जाते हैं कभी-कभी
पल-पल इनके साथ रहो, तुम इन्हें अकेला मत छोड़ो
अपने साये से भी बच्चे, डर जाते हैं कभी-कभी
खेतों को चिड़िया चुग जाती, बीते कल की बात हुई
अब तो मौसम भी फ़सलों को, चर जाते हैं कभी-कभी
आँख मूंदकर यहाँ किसी पर, कभी भरोसा मत करना
यार-दोस्त भी सर पे तोहमत, धर जाते हैं कभी-कभी
जिनके फ़न को दुनिया, अक्सर अनदेखा कर देती है
वे ही इस दुनिया को रोशन, कर जाते हैं कभी-कभी
मेरे शहर में मिल जाते हैं, ऐसे भी कुछ दीवाने
रात और दिन सड़कों पर भटकें, घर जाते हैं कभी-कभी
अगर किसी पर दिल आ जाये, इसमें दिल का दोष नहीं
अच्छा चेहरा देखके हम भी, मर जाते हैं कभी-कभी
ना पीने की आदत हमको, ना परहेज़ है पीने से
हम भी जाते हैं मयख़ाने, पर जाते हैं कभी-कभी।

हमें पता है क्या सोचेगा, यह बेदर्द ज़माना भी
सबके आगे ठीक नहीं है, दिल का हाल सुनाना भी
उसकी गली से जब भी गुज़रें, तो ये दिल खिल जाता है
ठीक नहीं है लेकिन अपना, रोज़ का आना-जाना भी
वैसे तो अपनी आँखों में, इक दरिया भी बहता है
मगर कहाँ मुमकिन है यारों, दिल की आग बुझाना भी
मिलके कोई बिछड़ जाये तो, सब कुछ ख़त्म नहीं होता
ठीक नहीं है किसी की खातिर, रो-रो जान गँवाना भी,
तनहाई की कैद से, खुद को रिहा करो, बाहर निकलो
हो सकता है भर दे कोई, दिल का ज़ख़्म पुराना भी
बच्चे की मानिंद अगर ये, अपनी ज़िद पर आ जाये
ऐसे में आसान नहीं है, इस दिल को बहलाना भी
आज तरक्की पहुँच गई है, कस्बों और देहातों तक
सबको कहाँ मयस्सर लेकिन, एक वक़्त का खाना भी।



देवमणि पांडेय

ए-2, हैदराबाद एस्टेट, नेपियन सी रोड, मलाबार हिल, मुंबई - 400 036

वैचारिक आमंत्रण

आपके भीतर छिपा हुआ है एक अनूठा रचनाकार, उसे उजागर करने का सपना हम करते हैं साकार, आप हमें भेजिये विचार, हम देंगे उनको आकार, 'रेल दर्पण' है, वैचारिक संगम का सार्थक आधार!

'रेल दर्पण' का अगला अंक जून, 2013 में प्रकाशित होगा। इस अंक में प्रकाशनार्थ अपनी मौलिक रचनाएँ आप मौलिकता के प्रमाणपत्र सहित सुवाच्य स्वरूप में हमें 30 अप्रैल, 2013 तक या इससे पहले अग्रिम पते पर डाक के ज़रिये भेज सकते हैं, या फिर इसी अवधि में हमारे ई-मेल पते editor.raildarpan@gmail.com पर हिंदी रचनाएँ PDF फॉर्मेट में तथा अंग्रेज़ी रचनाएँ Word Document में मेल कर सकते हैं। डाक के ज़रिये रचनाओं के प्रेषण के लिए हमारा पता है:-

प्रधान सम्पादक

'रेल दर्पण' पत्रिका,

मुख्य जनसम्पर्क कार्यालय, पश्चिम रेलवे,
तीसरी मंज़िल, स्टेशन भवन, चर्चगेट, मुंबई - 400 020.

www.wr.indianrailways.gov.in